ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 4 मई -II, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

विश्व की सबसे बड़ी पुस्तक का भव्य विमोचन

मुम्बई (मुलुंद)। ब्रह्माकुमारी संस्था के तत्वाधान में विश्व की सबसे बड़े आकार 28 X 18 फीट वाली पुस्तक का विमोचन भव्य समारोह में सम्पन्न हुआ। इसे 'एशिया बुक ऑफ रिकार्डस' में शामिल किया जा चुका है। इस किताब में ब्रह्माकुमारी संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा के 75 वर्ष के मिशन की अनूठी गाथा लिखी गई है।

एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस (इंग्लैंड) के प्रतिनिधि थामस बेन ने पुस्तक **''प्रजापिता ब्रह्मा - एक अद्भुत जीवन रहस्य''** को विश्व की सबसे बड़े आकार वाली पुस्तक के रूप में मान्यता देते हुए कहा कि आध्यात्मिकता एवं धार्मिक आधारों को प्रतिपादित करने वाली यह पुस्तक निश्चित रूप से युवाओं में प्रेरणा एवं जागृति लायेगी।

विचार, वाणी और व्यवहार का केन्द्र - संगमतीर्थ धाम : मोदी

अहमदाबाद (महादेवनगर)। संस्कार सरिता का तीर्थ धाम है यह संगमतीर्थ धाम। श्रेष्ठ मानव निर्मित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने का केन्द्र बनेगा संगमतीर्थ धाम। यह धाम विचार और आचार का संगम है, वाणी और व्यवहार का संगम है, अभय और निर्भय का संगम है। भारत की मूलभूत सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक भारत के सपनों का साकार रूप है संगम तीर्थ धाम। संस्कार स्थापन की प्रक्रिया को जितना बल मिलेगा उतना ही समाज स्वस्थ बनेगा।

उक्त विचार गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा नवनिर्मित संगम तीर्थ धाम के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित लगभग तीन हजार गणमान्यजन तथा ब्रह्माकुमार भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि लाखों नौजवानों को प्रशिक्षित करने की यह योजना इस बात का परिचायक है कि हम अपनी वर्तमान स्थिति से और अधिक उच्चता को प्राप्त करना चाहते हैं और समाज को श्रेष्ठ योगदान देना चाहते हैं। अगर संस्कृति विस्तृत, सक्षम व प्राणवान रहती है तो उसका फैलाव तेज होता है। संस्कृति मन-मंदिर में विराजित है तो विकृति की कोई संभावना नही होती है। जैसे-जैसे संस्कार व संस्कृति का प्रभाव कम होता जाता है वैसे-वैसे विकृति का दुष्प्रभाव बढ़ने लगता है। अगर विकृति से बचना है तो संस्कार और संस्कृति को बढावा देना आवश्यक है। इस संगम तीर्थ धाम में ऐसी व्यवस्था विकसित की जा रही है जिसमें युवाओं को उन प्राचीन मूल्यों का अनुभव कराया जाए।

गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ब्रह्माकुमारीज द्वारा नवनिर्मित संगमतीर्थ धाम के उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। मंचासीन हैं ब्र.कु.निर्वैर, पूर्व मुख्यमंत्री नरहरि अमीन, ब्र.कु.चन्द्रिका तथा मुकेश पटेल।

मुख्यमंत्री ने युनिवर्सिटी कन्वेन्सन सेन्टर के विशाल आडिटोरियम में ब्रह्माकुमारी संस्था में पिछले पच्चीस वर्षों से ज्ञान-योग की साधना करने वाले साधकों को सम्मानित करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था जैसे अनेक आंदोलन भारत की महान परम्परा व विरासत को बचाये रखने के लिये अपना जीवन समर्पित कर रहे है। यहाँ मैं मुगुटधारी वयोवृद्ध, तपोवृद्ध साधकों को देख रहा हूँ जिन्होने एक ही विचार के लिये, एक ही कार्य के लिये अपने जीवन के महत्वपूर्ण पच्चीस साल लगा दिये, ये छोटी घटना नही है, मैं आप सबका वंदन करता हूँ। लाखों नौजवान अपने नीजि सुख-चैन को छोड़कर समाज के सुख-चैन के लिये अपने आपको समर्पित करें इसी से एक उज्जवल भविष्य की आशा बंधती है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी के प्रेरणादायी उद्बोधन को सुनते हुए मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी।

मुझे आशा है कि गुजरात की धरती पर ये संस्कार सरिता भिन्न-भिन्न रूप से प्रगट होती रहे। इस संस्कार सरिता में सबको (शेष पेज 3 पर)

मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी युनिवर्सिटी कन्वेन्सन सेन्टर के विशाल आडिटोरियम में उपस्थित गणमान्यजन को सम्बोधित करते हुए।